अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ पार्ट 3
प्रश्नपत्र – पञ्चम
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

कठोपनिषद्

25.08.20

कठोपनिषद् के आधार पर यम-नचिकेता संवाद का वर्णन अपने शब्दों में करें –

कठोपनिषद् में अत्यन्त सुबोध एवं सरल वर्णन शैली के माध्यम से यम-नचिकेता संवाद रूप में ब्रह्म विद्या का बड़ा ही विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

बालक होते हुए भी नचिकेता विवेकशील था। विश्वजित याग में अपने पिता वाजश्रवा के द्वारा अनुपयुक्त गायों को ब्राह्मणों को दान देते हुए देखकर उसे बहुत दुःख हुआ। उसने अपने पिता से पूछा – 'आप मुझे किसको देंगे ?' पिता ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन नचिकेता ने उसी प्रश्न की बार-बार आवृत्ति की। परिणामतः उसके पिता ने क्रोध के आवेश में आकर कहा – 'मैं तुझे मृत्यु को दूँगा।' अपने पिता के कथन की उपेक्षा नहीं कर वह सीधे यमराज के निवास स्थान पर गया। उस समय यमराज अनुपस्थित थे। लगातार तीन दिनों तक उपवास करता रहा। अपने निवास पर लौटने के पश्चात् यमराज को इसकी सूचना मिली। उसने त्वरित नचिकेता के समक्ष उपस्थित होकर उसकी पूजा की तथा क्षमा की याचना की। अपनी अनुपस्थिति में तीन रात्रि तक अपने निवास पर नचिकेता के उपवास के लिए उससे तीन वर माँगने का अनुरोध किया।

पितृभक्त नचिकेता ने सर्वप्रथम पिता की प्रसन्नता के लिए यमराज से वर की याचना की। इस याचना को सुनकर प्रसन्नतापूर्वक वर प्रदान करते हुए यमराज ने कहा — 'जब तुम मेरे यहाँ से अपने घर जाओगे तो तुम्हारे पिताजी तुम्हें पहचानकर अपरिमित स्नेह प्रदान करेंगे। उनका क्रोध समाप्त हो जाएगा। उनका मन प्रसन्न हो जाएगा। अतः वे जीवन के अवशिष्ट दिन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।' इस प्रथम वर की प्राप्ति के पश्चात् नचिकेता ने स्वर्गलोक की नानाविध विशिष्टताओं को बताते हुए उसकी प्राप्ति के साधनभूत अग्निविज्ञान की याचना की। यह उसका दूसरा वर था। यमराज ने देखा कि नचिकेता योग्य शिष्य है। अतः उसने सोचा कि सत्पात्र को दी हुई विद्या फलवती होती है। इसलिए उसने नचिकेता से कहा —

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध
स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां
विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम्॥

~~अर्थात्~~ मैं इस अग्निविद्या का मर्मज्ञ हूँ। इस अग्निविद्या के अनुष्ठान से व्यक्ति चिरकाल तक स्वर्ग सुख को प्राप्त कर सकता है। साधारण लोग इस अग्निस्वरूप ज्ञान को नहीं जानते हैं। इसे परम विद्वान् ही जानते हैं। अतः तुम भी मुझसे इस रहस्य को जान लो। यमराज ने नचिकेता को बतलाया कि स्वर्गलोक का कारण अग्नि है। परमात्मा से सर्वप्रथम अग्नितत्त्व की ही उत्पत्ति हुई। इसी अग्नि से सम्पूर्ण सृष्टि का विकास हुआ। यमराज ने जिस रूप में अग्निविद्या की शिक्षा दी ठीक उसी रूप में नचिकेता ने उससे कह सुनाया, क्योंकि वह एक कुशाग्र बुद्धि बालक था। यमराज नचिकेता की जिज्ञासा तथा उसके अद्वितीय ज्ञान-धारण क्षमता को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। संतुष्ट होकर नचिकेता से यमराज ने पुनः कहा — प्रसन्न होने के कारण मैं तुम्हें आज एक अधिक वरदान देता हूँ। मेरे द्वारा उक्त यह अग्नि तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध

होगी – 'तवैव नाम्ना भवितायमग्नि: ।' इसके पश्चात् यमराज ने उस अग्निविद्या का फल भी बताया । यमराज ने द्वितीय वर के प्रकरण का उपसंहार करते हुए कहा – 'हे नचिकेता ! तुम्हारे दूसरे वरदान के रूप में हमने अग्निविद्या का सांगोपांग वर्णन किया । आज से मनुष्य इस अग्नि को तुम्हारे ही नाम से कहेंगे ।'

द्वितीय वर की उपलब्धि के पश्चात् नचिकेता ने तृतीय वर की याचना की । इस तृतीय वर में उसने आत्म रहस्य ज्ञान की याचना की । उसकी महती आकांक्षा थी कि वह आत्मा के अस्तित्व के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करे । उसने यमराज से कहा कि इस आत्मा के विषय में अनेक लोगों की अनेक धारणाएँ हैं । कुछ लोगों के अनुसार देहावसान के पश्चात् इस आत्मा का अस्तित्व रहता है तथा कुछ लोगों की यह धारणा है कि देहादि से अतिरिक्त आत्मा नामक कोई तत्त्व नहीं है । अत: उसने यमराज से कहा कि आप योग्य गुरु हैं । आप मृत्यु के देवता हैं । अत: आपका अनुभव प्रामाणिक होगा। अत: आप मेरे इस सन्देह (अस्ति, नास्ति) को दूर करें ताकि मैं भी इस आत्मतत्त्व को अच्छी तरह समझ सकूँ ।

नचिकेता के गूढ़ प्रश्न को सुनकर यमराज ने प्रसन्नता का अनुभव किया । उसने शिष्य की पूरी परीक्षा लेने के बाद ही आत्मज्ञान की शिक्षा देना उचित समझा । इसलिए उसने नचिकेता को सांसारिक प्रलोभनों में फँसाकर उसकी परीक्षा लेने के लिए भूमिका प्रस्तुत की । उसने आत्म तत्त्व की सूक्ष्मता का प्रतिपादन करते हुए कहा कि मनुष्य की तो बात ही और है देवताओं के द्वारा भी आत्मतत्त्व की जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी । इस सम्बन्ध में उन्हें सदा विचिकित्सा बनी रही । अत: तुम किसी अन्य वर की याचना करो । इस पर नचिकेता ने कहा कि आपने अभी बताया है कि सत्साधनों से युक्त देवों ने इस आत्मतत्त्व को नहीं समझा । आप भी उसकी गुरुता का प्रतिपादन कर रहे हैं । अत: यह सिद्ध होता है कि यह आत्म-

तत्त्व अत्यन्त महान् वस्तु है। इसलिए इसका ज्ञाता भी महान् हो जाएगा। दूसरी बात यह है कि पण्डित लोग भी इसके विषय में अनभिज्ञ हैं। अतः वे भी इस विषय में कुछ बता नहीं सकते। आपके समान आत्मतत्त्व का वक्ता (उपदेष्टा) दूसरा कोई नहीं है। अतः आपके अतिरिक्त इसे कौन बता सकता है। अतः इसकी तुलना में मेरी दृष्टि में कोई अन्य वर है ही नहीं। ब्रह्म-स्वरूप आत्मा के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ अनित्य हैं। अतः मुझे यही वरदान दीजिए।

विषय की गम्भीरता से विचलित न होनेवाले नचिकेता को यमराज ने पुनः अनेक प्रलोभन दिए। उसने शतायुष पुत्र-पौत्र, असंख्य पशुओं एवं हस्ति-अश्व-हिरण्य, बड़े साम्राज्य, दीर्घकालीन जीवन, प्रचुर सम्पत्ति, चिरजीविका पृथिव्याधिपतित्व आदि प्रदान करने की प्रतिज्ञा की। पुनः उसने कहा कि मैं तुम्हें देव मनुष्यलोकों की सम्पूर्ण भोग्य वस्तुओं का भोक्ता बना देता हूँ ताकि तुम्हें आधि-व्याधि की पीड़ा न सहनी पड़े। इस प्रकार यम-राज ने शिष्य की परीक्षा के लिए आत्मज्ञान की दुर्बोधता का प्रति-पादन किया। इसके बाद दुर्लभ भोगों के द्वारा नचिकेता को प्रलोभन देने का प्रयास किया, किन्तु नचिकेता अपने लक्ष्य से टस-से-मस नहीं हुआ। उसने वैराग्यपूर्ण तर्कों को प्रस्तुत करते हुए भोगैश्वर्य की नश्वरता बतलाकर अपने दृढ़ निश्चय को अभिव्यक्त किया। उसने कहा कि आपके द्वारा दिये गये भोग, ऐश्वर्य क्षणभंगुर हैं। धन, यौवन तथा आयु विद्युत के सदृश चंचल हैं। ये भोग मनुष्य की सभी इन्द्रियों के तेज को नष्ट कर देते हैं। रमणियाँ पुरुष के तेज को नष्ट कर देती हैं। पुत्रादि ऐश्वर्य के नष्ट होने पर मनुष्य क्षुब्ध होता है। उसकी सारी इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। ये सारे के सारे अनित्य भोग हैं। मैं इन्हें नहीं चाहता। विवेकी मनुष्य के लिए ये सभी भोग तुच्छ हैं। भोगों के सर्पगृह में अविवेकी ही निवास करता है। अतः

आप हमें मोक्ष की प्राप्ति के साधन आत्मतत्त्व का ज्ञान दें, क्योंकि इस आत्मतत्त्व का अनुभव आपने किया है। मैं इस वर के अतिरिक्त दूसरे वर की याचना नहीं कर सकता। यह मेरा दृढ़ निश्चय है।

जब यमराज ने यह पूर्णतः समझ लिया कि नचिकेता का मन विषय जाल में फँसनेवाला नहीं है, तब उसने उसे ब्रह्मविद्या का अधिकारी समझकर मोक्ष एवं अभ्युदय के साधन विद्या तथा अविद्या के भेद का प्रतिपादन विस्तार से किया। अविद्या के कारण मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। लेकिन विद्यासम्पन्न व्यक्ति मोक्ष की उपलब्धि कर आवागमन के बंधन से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

अतः हम देखते हैं कि यम-नचिकेता संवाद के माध्यम से ऐहलौकिक एवं परलौकिक सुखों की हेयता तथा ब्रह्मविद्या की उपलब्धि कर मोक्षप्राप्ति की उत्कृष्टता की स्थापना की गई है।